International Journal of Jyotish Research: 2019; 4(1): 21-23

International Journal of Jyotish Research
(वेदचक्षु)

ISSN: 2456-4427
Impact Factor: RJIF: 5.11
Jyotish 2019; 4(1): 21-23
© 2019 Jyotish
www.jyotishajournal.com
Received: 10-11-2018
Accepted: 15-12-2018

डॉ. प्रभाकरपुरोहित
अनुसन्धान अध्येता, भैषज्य ज्योतिष ज्योतिष विभागः श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नव देहली, भारत

Correspondence
डॉ. प्रभाकरपुरोहित
अनुसन्धान अध्येता, भैषज्य ज्योतिष ज्योतिष विभागः श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नव देहली, भारत

गृहारम्भ मुहूर्त

डॉ. प्रभाकरपुरोहित

प्रस्तावना

वास्तुभूमि पर गृहनिर्माण हेतु कार्यारम्भ करना अथवा गृहनिर्माण के लिए उसकी नींव रखना 'गृहारम्भ' कहलाता है। स्त्री एवं पुत्रादि भोगों तथा सुखों का जनक, धर्म, अर्थ एवं काम को प्रदान करने वाला, शीत, वृष्टि एवं आपद का निवारण कर सुविधा और सुरक्षा प्रदान करने वाला गृह सुख का अधिष्ठान होता है। ऐसे सुख के अधिष्ठान स्वरूप गृह का निर्माण एक महत्वपूर्ण कार्य है। अतः इसका शुभारम्भ सुमुहूर्त में ही करना चाहिए। सामान्यतया गृहारम्भ में भद्रा, गुरु, शुक्रास्त काल, अधिकमास, क्षयमास, तिथिवृद्धि–तिथिक्षय, ग्रहणकाल, संक्रान्ति, विष्कुम्भादि योगों के वर्जित काल, क्रूरग्रहवेधादि दोषों से रहित काल को ही लिया जाता है।[1]

गृहारम्भ में मासादि शुद्धिः ज्योतिर्विदाभरण में मास शुद्धि इस प्रकार दी गई है

फाल्गुने नभसि सिहस्ये,
वैशाखे शरणमषेशं विधत्ते।
आरब्धं द्वितनुभभानुयोगमुक्ते
निलेयामरसचिवादिभूखगस्ते।।[2]

1. मास शुद्धि

गृह निर्माण का कार्य प्रारम्भ करने के लिए मासशुद्धि के सन्दर्भ में वास्तुग्रन्थों में कहा गया है कि – चैत्र मास में गृहारम्भ का कार्य प्रारम्भ करने से शोक, वैशाख में गृहनिर्माण कार्य करने से अर्थ प्राप्ति, ज्येष्ठ में मृत्यु, आषाढ में पशुहरण, श्रावण में पशुवृद्धि, भाद्रपद में शून्यता, आश्विन में कलह, कार्तिक में मृत्यु एवं नाश, मार्गशीर्ष एवं पौष में अन्नलाभ, माघ में अग्निदाह का भय एवं फाल्गुन में लक्ष्मी की प्राप्ति हाती है।

ग्राह्यमासः अतः वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, पौष एवं फाल्गुन मास गृहारम्भ हेतु उत्तम हैं। मतान्तर से कार्तिक एवं माघ मास भी ग्राह्य हैं।

2. ग्राह्यपक्षः श्राद्धपक्ष एवं त्रयोदश दिन पक्ष को छोडकर शुक्ल पक्ष तथा कृष्ण पक्ष की पंचमी तिथि तक गृह निर्माण करना शुभ होता है।

3. ग्राह्यतिथिः गृहारम्भ में 2, 3, 5, 6, 7, 10, 11, 12 एवं 15 तिथियाँ शुभ होती हैं अर्थात प्रतिपदा का छोडकर शेष सभी तिथियाँ शुभ मानी गई हैं।

4. ग्राह्यवारः सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार एवं शनिवार गृहारम्भ के लिए प्रशस्त होते हैं। रविवार एवं मंगलवार का सर्वथा त्याग करना चाहिए। प्रस्तुत प्रसंग में ज्योतिर्विदाभरण का मत इस प्रकार है–

सद्वारे करणमुतोरजस्य भानौ।
तिष्यरश्वासनमृदुवासवैनधीरैः।[3]

1. भारतीय वास्तुविद्या – अ. 5, पृ. सं. 164–167
2. ज्योतिर्विदाभरण – 16/5
3. ज्योतिर्विदाभरण 16/9

5. ग्राह्य नक्षत्रः रोहिणी, मृगशीर्ष, हस्त, चित्राा, स्वाति, अनुराध, उत्तरापफाल्गुनी, उत्तराषाढा, उत्तराभाद्रपद, धनिष्ठा, शतभिषा एवं रेवती नक्षत्रा गृहारम्भ में शुभ होते हैं। कुछ आचार्यों के मत में पुष्य एवं पुनर्वसु नक्षत्रा भी शुभ माने गये हैं। गृह के मुख्य द्वार की दिशा के अनुसार भी गृहारम्भकालीन शुभ नक्षत्रों का निर्णय 'दिग्द्वारनक्षत्र' के द्वारा करने का निर्देश मुहूर्त ग्रन्थ में दिया गया है। जिसका वर्णन इस प्रकार है –

शलाका सप्तके देयं कृतकादि क्रमेण च,
वामदक्षिणभागं तु प्रशस्तं शान्तिकारकम्।
अग्रे पृष्ठे न दातव्यं यदीच्छेयमात्मनः,
द्धक्षं चन्द्रस्य वस्तोश्च ह्यग्रेन्पृष्ठे न शस्येत्।।[4]

अर्थात कृतिका से आरम्भ करके सात नक्षत्रा पूर्वादि दिशाओं में विभाजित हैं। पूर्वद्वार गृह के लिए कृतिका से आश्लेषा तक सम्मुखस्थ नक्षत्र और पश्चिमाभिमुख द्वार के लिए पृष्ठस्थ नक्षत्र होंगें। अतः कृतिकादि सात–सात नक्षत्र पूर्वादि दिशाओं के दिग्द्वार नक्षत्र हैं। उनमें सम्मुख व पीछे के नक्षत्रों में गृहारम्भ निषिद्ध व दक्षिण, वाम भाग के नक्षत्रों में गृहारम्भ विहित है।

विमर्शः मुहूर्तचिन्तामणि और वास्तु सम्बन्धी ग्रन्थों में जो वास्तु चक्र दिया गया है, उसमें वृष के अर्धे स्थित नक्षत्र संख्या एवं उसके परिणाम इस प्रकार हैं –

शीर्ष सूर्य नक्षत्र से	–	3 अग्निदाह
अग्रपाद सूर्य नक्षत्र से	–	4 शून्य
पृष्ठपाद	–	4 स्थिरता
पृष्ठ	–	3 लक्ष्मी प्राप्ति
दक्षकुक्षि	–	4 लाभ
पुच्छ	–	3 स्वामिनाश
वामकुक्षि	–	4 निःस्व ;निर्ध्नद्ध
मुख	–	3 पीडा

मतान्तर से वत्सचक्र

अर्धें	नक्षत्रा	परिणाम
मस्तक	3	सुख
नासिका	2	पाप
कण्ठ	4	सुख
पृष्ठ	3	लाभ
वामकुक्षि	3	रोग
दक्षिणकुक्षि	2	सुख
पुच्छ	4	धैर्य
पृष्ठपाद	2	दरिद्र
अग्रपाद	2	भय, मृत्यु

दिग्द्वार नक्षत्रा चक्र

				पूर्व						
		कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आद्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा		
	भरणी								मघा	
	अश्विन								पू.पफा.	
उत्तर	रेवती								उ.पफा.	दक्षिण
	उ.भा.								हस्त	
	पू.भा.								चित्रा	
	शतभिषा								स्वाति	
	धनिष्ठा								विशाखा	
		श्रवण	अभिजीत	उ.षा.	पू.षा.	मूल	ज्येष्ठ	अनु.		
				पश्चिम						

गृहारम्भ हेतु पूर्व वर्णित ग्राह्य नक्षत्र सभी मुहूर्त शास्त्रियों द्वारा समर्थित हैं, किन्तु उपरोक्त 'दिग्द्वारनक्षत्र चक्र' के अनुसार इन कथित शुभ नक्षत्रों में से कई नक्षत्र किसी ग्रह के आरम्भ काल में अशुभ भी हो जाते हैं। जिसका स्पष्टीकरण आगे किया जा रहा है- जिस दिशा में मकान का मुख्य द्वार स्थापित करना हो, उस दिशा वाले या उससे विपरीत दिशा वाले 'दिग्द्वारनक्षत्रा चक्र' में स्थित नक्षत्रों में गृहारम्भ अशुभ माना गया है।

पूर्व या पश्चिम दिशा में स्थित द्वार वाले गृह के आरम्भ काल में पूर्व और पश्चिम दिशा वाले चक्रोक्त नक्षत्रों में चन्द्रमा नहीं होना चाहिए। अर्थात पूर्व या पश्चिम दिशा में प्रस्तावित मुख द्वार वाले भवन के आरम्भ में कृतिकादि सात और अनुराधदि सात नक्षत्रों में चन्द्रस्थितिवशात् पूर्व या पश्चिमाभिमुख द्वार वाले गृह का आरम्भ किया जा सकता है। परन्तु चन्द्र नक्षत्र और गृह–नक्षत्र दोनों यदि चक्रोक्त यदि एक ही दिशा वाले या परस्पर विरुद्ध दिशा वाले नक्षत्रों में से हो तो ऐसी स्थिति में गृहारम्भ नहीं किया जा सकता है।

ज्योतिर्विदाभरण के अनुसार गृह चक्र में पूर्व दिशा से आरम्भ कर चारों दिशाओं में सात–सात नक्षत्रों को स्थापित करने से गृहचक्र होता है। सम्मुख और पृष्ठभाग नक्षत्रों में चन्द्रमा को छोडकर शेष नक्षत्रों में स्थित रहने पर गृहनिर्माण करना सिद्धिदायक हाता है।[5]

दिग्द्वार चक्र

		उ.		
		7		
पू.	9	गृह	9	प.
		9		
		द.		

6. गृहारम्भ में वर्ज्य

क. मंगलवार एवं रविवार।
ख. अष्टमी, अमावस्या एवं रिक्ता तिथियाँ।
ग. चर लग्न एवं चर नवांश 1–4–9–10 लग्न एवं नवांश।
घ. व्याघात, शूल, व्यतिपात, अतिगण्ड, विष्कुम्भ, गण्ड एवं परिघ योग।
ङ. सूर्य, चन्द्र, शुक्र एवं गुरु यदि नीचस्थ अस्तघँत एवं निर्बल हो।
च. भूशयन का दिन।

उपरोक्त पदार्थ गृहारम्भ में त्याज्य कहा गया है, वास्तु एवं मुहूर्त शास्त्रों में।

7. लग्नशुद्धि

स्थिर लग्नों में अर्थात वृष, सिंह, वृश्चिक एवं कुम्भ लग्नों में गृहारम्भ करना शुभ होता है। मतान्तर से द्विस्वभाव लग्नों मिथुन, कन्या धनु एवं मीन में भी गृहारम्भ शुभ होता हैं। चर लग्न एवं चर नवांश वर्जित है। शुभ ग्रह लग्न से छठे, आठवें और बारहवें भाव में न हो तो गृहारम्भ करना शुभ होता है। लग्न शुभग्रहाधिष्ठित एवं शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो गृहारम्भ शुभ माना जाता है।

विशेषः गृहारम्भ लग्न में ग्रहों की स्थितिवशात शुभाशुभ फल – दुष्टों और शत्राुओं के नाश के साथ उदय अभ्युदय कुल में सुख प्रदान करता है। परन्तु दुष्ट ग्रहों के साथ षष्ठ और अष्टम भाव से युक्त उदय लग्न ग्रह में सुखदायक नहीं होता, अर्थात कष्टकर होता है। यदि गृहारम्भ के समय सप्तम भाव दुष्ट ग्रह से युक्त हो तो अहंकार के अभ्युदय से गृहकलह होता है।[6]

[5]. स्युः सप्तसप्तानलभादुकूनि,
प्राच्याश्चतुर्दिक्षु निशान्त चक्रे।
पुरोगपृष्ठस्थमिहौषधीषं
त्यक्त्वा तदारम्भरणमिष्टमुक्तम्।। ज्योतिर्विदाभरणम् 16/12

[6]. दुष्टारिनाश उदयो{पि कुले सुखात्यै – ज्योतिर्विदाभरण 16/19

गृहारम्भ के समय यदि लग्न में बृहस्पति, सतम में बुध, तृतीय में शनि, षष्ठ भाव में सूर्य, चतुर्थ भाव में शुक्र तथा एकादश भाव में मंगल हो तो आरम्भ होने वाला गृह चिरस्थायी होता है। अर्थात उक्त सभी ग्रह स्थिति गृहारम्भ के समय शुभ होती है।[7]

8. भूमि शयन विचार

भूमि शयन के समय में गृह के निर्माण हेतु खनन का निषेध है। सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्रा 5,7,9,12,19
और 26वाँ हो तो भूमिशयन माना जाता है। भूमि की सुप्तावस्था में गृह निर्माण, तालाब, वापी, कूप इत्यादि का खनन करना शुभ नहीं होता है।

9. गृहारम्भ के विशेष योग

1. श्रावण मास, शुक्ल पक्ष, सप्तमीतिथि, शनिवार, शुभयोग, स्वातिनक्षत्रा एवं सिंह लग्न इन सात सकारों क योग का गृहारम्भ में अत्यन्त प्रशस्त माना गया है। अतः इन सात सकारों में किया गया वास्तुकर्म पुत्रार्क एवं सुख–शान्ति देने वाला होता है।[8]
2. गृहारम्भकालीन लग्न में बृहस्पति, सप्तम में बुध, छठवें में सूर्य, चतुर्थ शुक्र और तृतीय शनि हो तो गृह शतायु होता है।
3. पुष्य, उत्तराषाढा, उत्तरापफाल्गुनि, उत्तराभाद्रपदा, रोहिणी, मृगशिरा, श्रवण, आश्लेषा एवं पूर्वाषाढ़ा इन नक्षत्रों में से किसी नक्षत्र में बृहस्पति हो तो उसमें बनाया हुआ गृह पुत्रसुख एवं राज्य सुखकारक होता है।
4. विशाखा, अश्विनी, चित्रा, धनिष्ठा, शतभिषा और आर्द्रा ये नक्षत्र शुक्र से युक्त होकर तथा शुक्रवार हो तो ऐसे योग में धन–धान्य की प्राप्ति होती है।
5. रोहिणी, अश्विनी, उत्तराफाल्गुनि, चित्रा एवं हस्त ये नक्षत्र बुध युक्त हो तो उस दिन बुधवार भी हो तो ऐसे योग में गृहारम्भ करने पर गृह सर्वविध सुख एवं पुत्र प्रदायक होता है।
6. कर्क लग्न में चन्द्रमा, केन्द्र में बृहस्पति, शेष शुभग्रह अपने मित्र अथवा उच्चांश में हो तो ऐसे योग में गृहारम्भ करने पर गृहलक्ष्मी से युक्त रहता है।
7. मीन राशि में स्थित शुक्र यदि गृहारम्भ कालीन लग्न में हों या कर्क का बृहस्पति चतुर्थ स्थान में स्थित हो अथवा तुला का शनि ग्यारहवें भाव में हो वह गृह सदा वैभवयुक्त रहता है।

विशेष – गृहारम्भ के समय सभी ग्रहों का विचार कर लेना चाहिए क्योकि जो गृह गृहारम्भ करते समय बलहीन होता है उससे सम्बन्धित पक्ष उस घर में वास करने पर पीडित होता है। इस प्रकार आचार्य श्रीपति ने कहा है –

रवौ गृहेशे गृहिणी शशांके ध्नं सिते देवगुरौ सौख्यम।
विनाशमायान्ति बलेन हीने नीचस्थिते वास्तुमुागते वा।।

अर्थात – सूर्य गृहस्वामी, चन्द्र गृहिणी, शुक्र धन, एवं बृहस्पति सुख का प्रतिनिधि होता है। यह गृह नीच, अस्त एवं बलहीन होने पर अपने अन क्षेत्र का विनाश करते हैं।

---

[7]. ज्योतिर्विदाभरण 16/19

[8]. शनौ स्वाती सिंह लग्नं शुक्लक्षश्च सप्तमी,
शुभयोगः श्रावणश्च सकाराः सप्तकीर्तिताः।
सप्तानां योगतो वास्तुः पुत्रावित्तप्रदः सदा,
गजश्च धन–धन्यनित्यं तिष्ठति सर्वतः।। वास्तुप्रदीपः